वीर निर्वाणोत्सव

धन्य तेरस · रूप चौदस · निर्वाणोत्सव

एक्टिविटी बुक

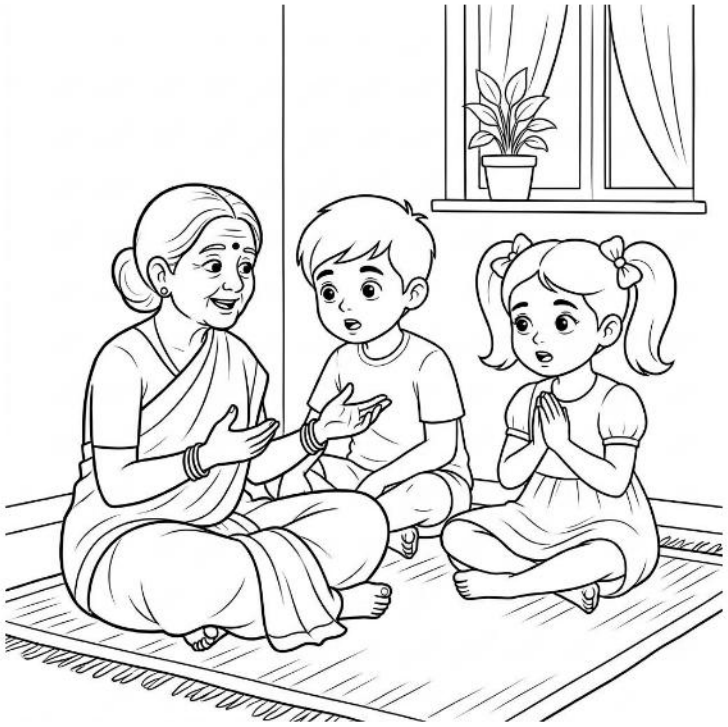
नामः _____



धन्य तेरस 🙏

कार्तिक कृष्ण तेरस

दिन 1: कहानी



दादी बोलीः बच्चो, कल्पना करो कि हम भगवान महावीर के समय में हैं। तीस वर्ष तक हम रोज़ उनकी दिव्यध्वनि सुनने जाते थे।

धन्य थी वह तेरस, जिस दिन हमने भगवान की अंतिम दिव्यध्वनि सुनी थी। इसलिए यह धन्य तेरस है।

आज लोग इसे धन तेरस कहकर सोना, चाँदी और बर्तन खरीदते हैं।

पर भगवान की असली सम्पत्ति तो वह तत्त्वज्ञान है, जो उनकी वाणी में आया।

सच्चा धन चुनो 💎

भगवान की असली सम्पत्ति पर गोला लगाओ और संदूक के नीचे लिखो

दिन 1: एक्टिविटी

सोना | जिनवाणी | हीरे | तत्त्वज्ञान | पैसे | आत्मा की पहचान | नए बर्तन | चाँदी



1. _____

2. _____

3. _____

रूप चौदस 🙏

कार्तिक कृष्ण चौदस

दिन 2: कहानी



दादी ने आगे बताया: तेरस के बाद भगवान की दिव्यध्वनि खिरना बंद हो गई।

चौदस के दिन लोग गए तो दिव्यध्वनि सुनने को नहीं मिली, केवल भगवान के दर्शन मिले, यानी भगवान का रूप देखने को मिला।

इसीलिए इस चौदस को रूप चौदस कहते हैं। सोचो, उस दिन सबको कैसा लगा होगा?

किस दिन क्या हुआ? 🔗

हर दिन को उस दिन की घटना से रेखा खींचकर मिलाओ

दिन 2: एक्टिविटी

धन्य तेरस	न दिव्यध्वनि, न दर्शन, भगवान का निर्वाण
रूप चौदस	गौतम स्वामी जी को केवलज्ञान
अमावस्या	भगवान की अंतिम दिव्यध्वनि सुनी
अमावस्या की संध्या	दिव्यध्वनि नहीं, केवल दर्शन मिले

भगवान की वाणी आज भी शास्त्रों में है। आज मैंने जिनवाणी की यह बात पढ़ी या सुनी:

_____

_____

वीर निर्वाणोत्सव 🙏

कार्तिक कृष्ण अमावस्या

दिन 3: कहानी



अमावस्या को न दिव्यध्वनि मिली, न दर्शन। चौदस की रात के अंतिम पहर में, अमावस्या की सुबह से पहले, भगवान महावीर स्वामी पावापुरी से निर्वाण को प्राप्त हुए। उन्होंने आठों कर्म जीत लिए, इसलिए यह विजय का पर्व है।

पर साथ ही साथ अब हमें भगवान महावीर जी के प्रत्यक्ष दर्शन नहीं मिलेंगे। यह बेटी की विदाई जैसा अवसर है: मन में खुशी भी, आँखें नम भी। इसलिए यह पटाखों और धूम मचाने का नहीं, शांति और गंभीरता का पर्व है।

🙏 गौतम स्वामी जी

भगवान के प्रथम गणधर गौतम स्वामी जी रोने नहीं बैठे। वे जगत से दृष्टि हटाकर अपने में चले गए और उसी दिन संध्या को उन्हें केवलज्ञान हुआ। उन्होंने भगवान के तत्त्वज्ञान का झंडा थाम लिया, गिरने नहीं दिया।

बारह वर्ष बाद गौतम स्वामी जी का निर्वाण हुआ, उसी दिन सुधर्म स्वामी को केवलज्ञान हुआ, और उनके बाद जम्बू स्वामी को। अतः इन सभी को अनुबद्ध केवली भी कहा जाता है।

निर्वाणोत्सव कैसे मनाएँ? 🙏

सही काम पर ✓ लगाओ, फिर नीचे की रंगोली में रंग भरो

दिन 3: एक्टिविटी

1. जिनवाणी पढ़ना और सुनना ☐
2. पटाखे फोड़ना ☐
3. शांति से भगवान महावीर का स्मरण करना ☐
4. पैसे की पूजा करना ☐
5. गौतम स्वामी जी की तरह अपने आत्मा में जाना ☐
6. भगवान की वाणी दूसरों तक पहुँचाना ☐



निर्वाण लाडू: नारियल का सूखा गोला
निर्वाण के प्रतीक स्वरूप हम सभी उस दिन भगवान को निर्वाण लाडू चढ़ाते हैं। वह नारियल का सूखा गोला होता है। मीठी चीज़ों से चींटी आदि छोटे जीवों की हिंसा हो सकती है, इसलिए सूखा गोला चढ़ाते हैं।
चढ़ाते समय भाव: हे भगवन्! आप मोक्ष पधारे, अब हम भी आत्मा की शरण में जाते हैं।

उत्तर (माता-पिता के लिए): सच्चा धन: जिनवाणी, तत्त्वज्ञान, आत्मा की पहचान · मिलान: धन्य तेरस से अंतिम दिव्यध्वनि, रूप चौदस से केवल दर्शन, अमावस्या से निर्वाण, संध्या से गौतम स्वामी जी को केवलज्ञान · सही: 1, 3, 5, 6
आधार: रक्षाबंधन और दीपावली (डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल) · तिलोयपण्णत्ती · हरिवंशपुराण · पं. कैलाशचंद्र जैन शास्त्री